वकत एक अजीम नेमत

शैख मुहम्मद इशाक मुलतानी.

नोट: आप से दरखास्त है की इसे भाषा या ग्राम्मर का अदब ना समझे.

1| वकत ही ज़िन्दगी हे

2| वकत बरबाद करना खुदकुशी हे

3| फिर पछताने से किया होता हे

4| तौबा मे देर मत कर

5| जन्नत वालो की एक हसरत

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम

1| वकत ही ज़िन्दगी हे

एक मशहूर मिसाल हे कि वकत भी एक सोना (गोल्ड) हे लेकिन ये सिर्फ उन लोगो के लिये सही हे जो मौजूद चीजो की कद्रो कीमत सिर्फ अन्दाजे और ख्याल के ज़रिये ही से कर सकते हे, लेकिन जो लोग पाकीजा ख्यालात और नजरियात और अच्छी फिकरो वाले होते हे उन्के यहा तो वकत एक बहुत कीमती चीझ हे, उन्के यहा तो वकत का मुकाम बहुत ही बुलद और ऊंचा हे, वो कहते हे कि वकत ही ज़िन्दगी हे,

इन्सान को सोचना चाहिये कि इस दुनीया मे उस्की ज़िन्दगी कितनी हे, उस्की ज़िन्दगी पैदाइश और

मौत के दरमयान मामूली सा वकफा ही तो हे, सोना (गोल्ड) आने जाने वाली चीझ हे, वो अगर हाथ से निकल जाता हे, तो दुबारा भी हासिल हो सकता हे, लेकिन जो वकत गुजर चुका हे और जो जमाना चला गया वो किसी सूरत मे और किसी कीमत पर वापिस नही आ सकता, जरा दिल से सोचये कि क्या वकत सोने, चांदी, हीरे, जवाहरात और हर चीझ से ज्यादा कीमती नही?.

2| वकत बरबाद करना खुदकुशी हे

फर्क सिर्फ इतना हे कि खुदकुशी हमेशा के लिये ज़िन्दगी से मेहरूम कर देती है और वकत जाये करना एक महदूद (लिमिटेड) जमाना तक जिन्दा को मुरदा बना देती हे, यही मिनट, घन्टे और दिन जो गफलत और बेकारी मे गुजर जाते हे अगर इन्सान हिसाब करले तो उन्की कूल तादाद बरसो तक पहूच जाती हे, अगर किसी से कहा जाये कि आपकी उमर के पांच दस साल कम कर दिये गये तो यकीनन उस्को सदमा होगा, लेकिन अगर वो बेकार बैठा हुवा अपनी कीमती उमर को बरबाद कर रहा हे, मगर उस्के खत्म हो जाने पर उस्को कोई अफसोस नही होता, अगरचे वकत का बेकार खोना उमर को कम करना हे लेकिन अगर यही एक

नुक्सान होता तो कुछ ज्यादा गम नही था, बहुत बडा नुक्सान जो बेकारी और वकत जाये करने से होता हे वो ये कि बेकार आदमी के ख्यालात नापाक और बुरे हो जाते हे और तरह तरह की जिस्मानी और रूहानी बीमारीयो मे मुबतला हो जाता हे.

हिर्स, लालच, जुल्मोसितम, जुवाबाजी, जिनाकारी, शराब पीना, आम तौर पर वो ही लोग करते हे जो बेकार पडे रहते हे, जब तक इन्सान की तबीयत दिल और दिमाग नेक और फायदेमन्द काम मे मशगूल ना होगा इस्का जुकाव जरूर बुराई और गुनाह की तरफ रहेगा, इन्सान उसी वकत इन्सान बन सकता हे जब वो अपने वकत पर निगरान हे, एक लम्हा भी फुजूल ना खोये, हर काम के लिये एक वकत और हर वकत के लिये एक काम मुकर्रर कर दे.

3| फिर पछताने से किया होता हे

वकत हमारे पास इस तरह आता हे जिस तरह कोई दोस्त भेष बदल कर आता है और चुप चाप अपने साथ कीमती तोहफे लाता हे लेकिन अगर हम उनसे फायदा नही उठाते तो वो अपने तोहफो के साथ चुपके से चला जाता हे, और फिर कभी वापिस नही आता, हर सुबह को हमारे लिये नई नई नेमते आती हे लेकिन वकत जाये करते करते उन नेमतो से

फायदा उठाने की सलाहीयत आहिस्ता आहिस्ता खत्म हो जाती हे, खोई हुई दौलत मेहनत और किफायत शिआरी से फिर हासिल हो जाती हे, खोया हुवा इल्म मुताला से मिल सकता हे, खोई हुई तंदरूस्ती दवा से वापिस आ सकती हे, लेकिन खोया हुवा वकत लाख कोशिशो के बावजूद दुबारा हासिल नही हो सकता, बाद मे इन्सान को ये पुराना सबक हासिल होता हे, पवान चक्की उस पानी से नही चल सकती जो बेह गया हो, मौत पर इतना अफसोस नही होता जितना वकत के फौत हो जाने पर, दोजखी यही कहेगे ए अल्लाह तू हमे एक बार फिर दुनीया मे भेज दे.

नबी करीम صلى الله عليه وسلم के इरशाद का खुलासा हे कि हर दिन जब तूलू होता हे तो वो पुकार पुकार कर कहता हे कि ए इन्सान मे एक नई पैदा की हुई मखलूक हू मे तेरे अमल पर गवाह हू, मुझसे कुछ हासिल करना हे तो कर ले, मे अब कियामत तक लौट कर नही आउंगा, नबी करीम صلى الله عليه وسلم ने फरमाया मोमिन के दो खौफ हे एक जो गुजर चुका हे मालूम नही अल्लाह उस्का क्या करेगा, और एक जो अभी बाकी हे मालूम नही अल्लाह इस्मे क्या फैसला फरमाये, तो इन्सान को चाहिये कि अपनी ताकत से अपने नफस

के लिये, दुनीया से आखिरत के लिये, जवानी से बुढापे के लिये और ज़िन्दगी से मौत से पहले कुछ नफा हासिल करले.

4| तौबा मे देर मत कर

एक वो शख्स जो तौबा मे देरी करके टालता रहता हे आखिर किस दिन के लिये तौबा का मामला रोक कर रखा हे, कया तू ये कहता हे कि बूढा हो जावूगा तब तौबा करूगा ज़िन्दगी के दिन गुजर रहे हे हर दिन तौबा व इस्तेग्फार के लिये जोश दिलाता हे, लेकिन एतबार किसी दिन का नहीं, जब भी सच्ची तौबा करने लगेगा तो नफसानी ख्वाहिशों का लश्कर तुझ पर हमला करके तुझे हरायेगा, अफसोस अपने आपको इस्तिगफार से खुशबूदार कर, क्युकी गुनाहों की बदबू ने तुझे रूस्वा और बेइज्जत कर दिया हे, अपनी ख्वाहिशों का गला हौसला और हिम्मत की छुरी से जबह कर दे, क्युकी जब तक ख्वाहिसे जिन्दा हे तेरा दिल महफूज नहीं. आंसुवो की सियाही से लोगों के बारे मे अच्छे ख्यालात को लिख उस्की तरफ जो उस्को सही साबित करे और अपनी तौबा मे हजरत याकूब(अलै) के जैसा दर्द व गम, हजरत यूसुफ(अलै) जैसी पाकबाजी और खाहिशात से बचाव पैदा कर, वरना

यूसुफ(अलै) के भाइयो जैसी जिल्लत और रूस्वायी पैदा कर जब उन्होंने कहा था हम पर खैरात करें.
ज़िन्दगी के दिन घडीयों की सूरत मे और घडीया सासों की शक्ल मे पेश किये जायेगे, हर सांस एक खजाना हे तो एहतियात कर कि कहीं कोई सांस बगैर अमल के न गुजर जाये वरना कियामत के दिन खजाना खाली देखकर तुझे शरमिन्दा होना पडेगा.
इल्म और अमल दो जुडवा चीझे हे और इन दोनों की मां बुलन्द हिम्मती हे ए नौजवान इल्म हासिल करके अपने वकत को कीमती बना और उसे अमल के जेवर से सजा, अगर तू मेरी ये नसीहत कबूल करेगा तो तुझे बुलन्द मरतबे हासिल होंगे अपने इल्म पर अमल ना करने वाला शख्स इस बात से बेखबर होता हे कि उस्के पास कया हे, देखो अगर जुखाम हो तो हाथ मे खुशबू पकडने वाले को इस्से कुछ फायदा हासिल नही होता, एक आलिम के दिल का समुन्दर अलफाज के हीरे जवाहरात और मोती फेंकता हे जिसे लोग उठाते हे, उल्मा दुनीया मे एक कौने मे हे इसलीये दुनीया मे जाहिलों की कसरत हे.

5। जन्नत वालो की एक हसरत

जब भी कोई खुशी की बात आती हे तो बडे गम को भूल जाते हे, और ये बात पक्की हे कि जन्नत मे जाने

से बढकर कोई खुशी नही हो सकती, इसलिये जन्नती जब जन्नत मे जायेगे तो कहेगे तमाम तारीफे अल्लाह ही के लिये हे हम से वो गम चला गया, और जन्नत मे कितनी खुशी होगी कि इन्सान अल्लाह का दीदार करेगा, हूज़ूर का दीदार करेगा, नेक लोगो की महफिल होगी और इस बात की खुशी होगी कि अब ये नेमते हमसे कभी वापिस नही ली जायेगी,

इस खुशी के हाल मे भी जन्नतियो को एक बात का अफसोस रहेगा हदीस पाक मे आता हे हजरत शैख(रह) ने फजाइल जिकर मे ये हदीस लिखी हे, जन्नत वालो को किसी बात पर अफसोस नही होगा सिवाय एक बात के कि वो वकत जो उन्होने दुनीया मे अल्लाह की याद के बगैर यानी गफलत मे गुजारा था, कि काश हम इस्मे गफलत ना करते तो आज हमारे मरतबे इतने ज्यादा बुलन्द होते, अब बतावो जो अफसोस जन्नत मे भी ना छोडे वो कैसी बडी हसरत होगी तो इसलिये अपने वकत को अल्लाह की याद मे मशगूल कर लीजीये.

हवाला: एक हज़ार अनमोल मोती उर्दु से इन मज़मूनो के खुलासे का लिप्यान्तरण किया गया हे.